कुठ

ससुरिया लाप्पा

कुलः एसटरियेसी

- यह एक बारहमासी पौधा होता है।
- यह पौधा आर्कटिक तथा समशीतोष्ण क्षेत्रो में पाया जाता है।

उपयोग भाग : जड़

उपयोगः

- यह पौधा गठिया रोग में, सर्दी जुकाम तथा पेट दर्द में उपयोग किया जाता है।

जलवायु एवं मिट्टीः

- ठंडी तथा नम जलवायु इस पौधे के लिए उपयुक्त होती है।
- नम तथा रेतीली मिट्टी इसके लिए उपयुक्त होती है।

उपजाऊ सामग्रीः

- बीज और जड़ खंड।
- जड़ कलम।

नर्सरी तकनीक

- ससुरिया कोस्टस की तरह ।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कमरा न. 309, तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | **फैक्स** : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | **वेबसाईट** : www.nmpb.nic.in

नोटः– कृषि प्रौद्योगिकी का विकास हाई एलटीट्यूड प्लांट फिज़ियोलॉजी रिसर्च सेंटर, एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, उत्तराखण्ड के द्वारा किया गया है।

कुठ की खेती

सामान्य नाम	:	कुठ
वानस्पतिक नाम	:	ससुरिया कोस्टस
कुल	:	एसटरियेसी
उपयोगी भाग	:	जंड़ और प्रकंद
सामान्य उपयोग	:	कुठ की जड़ वाताहर प्रकृत्ति की होती है। यह वाताहारी, पीड़ाहारी और प्रतिरोधी होती है। पेट फूलने, सूजने, मासिक धर्म अनियमित एवं रुकावट, माँसपेशियों में सूजन के उपचार के लिए किया जाता है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कुठ

ससुरिया कोस्टस
कुलः एसटरियेसी

- कुठ सीधा, मजबूत 1–2 मीटर की लम्बाई वाला पौधा होता है।
- तना मोटा एवं रेशेदार होता है।
- जड़ गाजर जैसी बाहर होती है।

जलवायु एवं मिट्टी

- इसको समशीतोष्ण और नमी वाली जलवायु में 2500–3000 मीटर की ऊँचाई वाले क्षेत्र में प्रत्यारोपित किया जा सकता है ।
- गहरी दोमट मिट्टी इसकी मोटी लम्बी जड़ के विकास के लिए उपयुक्त होती है।

उगाने की सामग्रीः

- बीज तथा जड़ के खंड
- जड़ों की कटिंग तथा कॉलर क्षेत्र जिसकी परिधि 2.5 सेमी. होती है, उसका उपयोग पौध उगाने में किया जाता है।

नर्सरी तकनीक

पौध तैयार करनाः

- सितम्बर–अक्टूबर के दौरान पोलीहाऊस या बसंत ऋतु में इस पौधे को खेतों में बोया जाता है।
- पोलीहाऊस में अंकुरण तथा पौध विकास सुनिश्चित किया जाता है।
- सर्दियों के दौरान इसका अधिक विकास होता है। अधिक ऊँचाई पर बीजों से पौध के विकास में कम समय लगता है।

पौध दर और पूर्व उपचारः

- एक हेक्टेयर भूमि में लगभग 1.5 किलोग्राम बीजों या 18000 अंकुरित बीजों (पौध) की आवश्यकता पड़ती है।

खेत में रोपणः

भूमि की तैयारी और उर्वरक का प्रयोग

- खेत की जुताई अच्छी तरह से की जानी चाहिए।
- जुताई के दौरान खाद को 15 टन प्रति हेक्टयर की दर से खेत में डाला जाता है।

पौधा रोपण और अनुकूलतम दूरीः

- 6–9 महीने पुराने पौधों को प्रत्यारोपित किया जाता है।
- बीज बोने के लिए छोटे गड्ढों को तैयार किया जाता है और बीजों को 30 सेंटीमीटर की दूरी पर बोया जाता है।

अंतर फसल प्रणालीः

- भोजपत्र, एबीज पिंडरो तथा करकस आदि पौधे के साथ कुठ को बोया जा सकता है।

अंतर खेती और रख–रखाव पद्धतियाँः

- 6 माह के विकास के बाद पतला किया जाता है और पौधे के बीच की दूरी लगभग 2–2.5 फुट की रखी जाती है।
- बेहतर विकास और पैदावार के लिए 2–2.5 फुट की दूरी उपयुक्त होती है।

सिंचाईः

- विकास के एक वर्ष के पश्चात सिंचाई की आवश्यकता कम हो जाती है।
- शुष्क महीनों के दौरान 4–6 दिनों के अंतराल में सिंचाई करनी चाहिए।

निराई

- पौधे बनने के दौरान और वर्षा ऋतु में निराई करना आवश्यक होता है।

फसल प्रबंधन

फसल पकना और कटाई

- फसल को 2–4 वर्षों में तैयार करके काटा जाता है।
- सितम्बर–अक्टूबर के दौरान 15–20 दिनों में फूल निकलते हैं, उसके बाद जड़ों को काटा जाता है।
- फूलों को ऊपर से काटा जाता है और लगाने से पूर्व एक सप्ताह धूप में सुखाया जाता है।

कटाई पश्चात प्रबंधन

- मिट्टी को हटाने के लिए जड़ों को पानी से धोया जाता है।
  इनको छोटे–छोटे टुकडों में विभाजित किया जाता है और आंशिक छायादार
- स्थान में सुखाया जाता है
- शुष्क भंडारण चैम्बरों अथवा सूती थैलों में भंडारित किया जाता है।

पैदावार

- प्रति हेक्टेयर 2 से 3.5 टन पैदावार प्राप्त की जाती है।
- गढ़वाल में 2200– 2500 मीटर की ऊँचाई पर प्रति हेक्टेयर लगभग 3.5–4.0 टन की पैदावार हो सकती है।